महाभारत के शान्ति पर्व में मोक्ष चिन्तन

श्री प्रेमसुख शर्मा
व्याख्याता - व्याकरण
श्री कल्याण राजकीय आचार्य संस्कृत कॉलेज
सीकर, राजस्थान

सारांश -

महाभारत के शांति पर्व के अनुसार मानव जीव का सबसे उत्कृष्ट पुरुषार्थ मोक्ष ही माना जाता है। जीव अनादिकाल से अज्ञान के कारण बन्धन में पड़ा हुआ है। कर्म-बन्धन के नष्ट हो जाने पर संसार चक्र समाप्त हो जाता है। समस्त भारतीय दर्शनों में मोक्ष का निरूपण मिलता है परन्तु चार्वाक दर्शन में कहीं भी इसका निरूपण नहीं मिलता है। सभी दर्शनों में मोक्ष का विवेचन अनेक रूपों में मिलता है।

महाभारत में मोक्ष का विवेचन वेदान्त दर्शन के अनुसार मिलता है। वेदान्त दर्शन के सबसे पुराने ग्रन्थ प्राचीनतम उपनिषद् है। उनमें मोक्ष और उनके साधनों का विवेचन मिलता है। वेदान्त दर्शन वस्तुतः ब्रह्म विद्या है। वेदान्त में जीव का ब्रह्म भाव ही मोक्ष है। महाभारत के शान्ति पर्व में भगवत् साक्षात्कार ही मोक्ष का लक्षण है।

महाभारत के शान्ति पर्व में मोक्ष का निरूपदा है मोक्ष में दुःखों से छुटकारा ही नहीं अपितु मोक्ष में परम शान्ति, परमानन्द की अनुभूति, निर्मल ज्ञान और पराभक्ति आदि का भी निरूपण है।

जीव की ब्राह्मी अवस्था ही मोक्ष कहलाती है। अतः मोक्ष को ब्रह्मस्वरूपात्मक कहते हैं। ब्रह्म के समान ही मोक्ष भी शान्ति पर्व का मुख्य विषय है। ब्रह्मवित्त् ब्राह्मी स्थिति में स्थित होकर संसार को जीतकर मन को साम्यावस्था में पहुंचाकर निर्दोष और सम ब्रह्म में स्थित हो जाता है। ब्राह्मी स्थिति में रहते हुये ब्रह्मवित् प्रिय और क्षत्रिय में समान स्थितप्रज्ञ और मोह रहित होता है। आत्मा में रमण करने वाला ब्रह्मवित् ब्रह्म से युक्त होकर परमानन्द

को प्राप्त कर लेता है। परम पद मोक्ष को कहा जाता है।

परमधाम के लिये कहा है

''तद्धाम परमं ममं''

इस परमधाम की विशिष्टता यह है कि इसमें प्रवेश होता है प्रत्यार्वतन नहीं होता। इसीलिये कहा गया है –

''यद्गत्वा न निवर्तन्ते'' ।

यह परमधाम चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि के नियंत्रण से ऊपर है।

इस प्रकार महाभारत के शान्ति पर्व में मोक्ष में परम ज्ञान, परम आनन्द, पराभक्ति, परम शान्ति आदि का वर्णन प्राप्त है जो कि उपनिषदों आदि के अनुकूल है।

मुख्य शब्द - जीव, परमधाम, परावस्था, परम ज्ञान, ब्रह्म, जीवन मुक्तावस्था, ब्राह्मी स्थिति, मुक्तात्मा।

प्रस्तावना -

भारतीय दर्शन में मोक्ष को सर्वोत्तम पुरुषार्थ माना गया है। महाभारत के शान्ति पर्व में मोक्ष की महान, उत्तम व भव्य प्रशंसनीय व्याख्या है। महाभारत में मोक्ष का निरूपण है। मोक्ष का अभिप्राय दुःखों से छुटकारा ही नहीं अपितु मोक्ष में परम शान्ति, परमानन्द की अनुभूति और परा भक्ति भी है। जीव की ब्राह्मी अवस्था ही मोक्ष कहलाती है, अतः मोक्ष ब्रह्म स्वरूपात्मक है। आत्मा ही ब्रह्म है। आत्मा का साक्षात्कार हो जाने पर सर्वत्र एकत्व को प्राप्त हो जाने वाले ज्ञानी को शोक और मोह नहीं होता है। ज्ञानी व्यक्ति जीवित रहते हुए भी मुक्तावस्था में रहता है। इसलिए जीवन मुक्त कहलाता है।

उपनिषदों में ज्ञानी के इस प्रकार के व्यवहार से जीवन मुक्तावस्था मान्य थी। ईशावस्योपनिषद् में वर्णित है -

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवामद् विजानतः।

तत्र को मोहः कः शोकं एकत्वमनुपश्यतेः।।1

केनोपनिषद् में परमधाम को अनन्त स्वर्ग लोक भी कहा है। ब्रह्म साक्षात्कार हो जाने पर

व्यक्ति की प्रारब्ध कर्म में भोग पर्यन्त जीवन्मुक्तावस्था रहती है और शरीर छूटने पर परमधाम की प्राप्ति होती है।

‘‘यो वा एतामेवंवेदापपध्त्य पाप्या न मनन्ते
स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति।2

ब्रह्म से साक्षात्कार हो जाने पर आनन्द की प्राप्ति होती है, जिसमें सभी शुभ-अशुभ बन्धन में डालने वाले कर्म क्षीण हो जाते हैं। उपनिषदों में स्वर्ग शुभ कर्म का परिणाम होते हुए नित्य परमपद के अर्थ में भी प्रस्तुत होता है।

कठोपनिषद् में ब्रह्म से साक्षात्कार आनन्द की प्राप्ति है। यही आनन्द परमानन्द है -

एतच्छुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः
प्रब्रह्म धर्म्यमणुमेतमाप्यं
स मोदते मोदनीयं हिलब्ध्वा
विवृतं सद्म न चिकेतसंमन्ये।।3

व्यक्ति ब्रह्म साक्षात्कार कर ‘‘ब्रह्मवित्‘‘ हो जाता है। ब्रह्म सत्य, ज्ञान, अनन्त और आनन्द है। आनन्द स्वरूप ब्रह्म को प्राप्त कर सभी जीव आनन्द स्वरूप हो जाते हैं। तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है -

‘‘ब्रह्मविदाप्नोति परम्।
तदैवाम्युक्ता।
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।
यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्।
सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणाविपश्चितेति।‘‘ 4

छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है कि ब्रह्मवित् सभी दोषों को नष्ट कर सर्वस्व प्राप्त करता है -

‘‘न पश्योमृत्युं पश्यति न रोगं नोत दुःरक्ता सर्वाहं पश्यः पश्यति सर्वमाप्नोति सर्वशं इति।।5

उपनिषदों में सर्वत्र परमपद अथवा अमृतत्व को नित्य कहा गया है। मोक्ष की अवस्था

परम आनन्द की अवस्था है। कठोपनिषद् में कहा है -

अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा

ध्रुवम ध्रुवेण्विह न प्रार्थयन्ते।6

मोक्ष की अवस्था होने पर जीव शुभाशुभ कर्मों से परे हो जाता है। ये शुभ और अशुभ कर्म मनुष्य को बंधन में डालने वाले होते हैं। शुभाशुभरहित होने से जीव के कर्म मोक्ष की अवस्था में निष्काम कर्म होते हैं।

ब्रह्मज्ञान होने पर ज्ञानी मनुष्य पाप-पुण्य दोनों पर विजय प्राप्त कर लेता है। विजय प्राप्त ज्ञानी साम्य अवस्था को प्राप्त करता है। साम्यावस्था में स्थित होने पर मनुष्य को राग, द्वेष, शीत, उष्ण आदि कारण प्रभावित नहीं करते।

ब्रह्म रूप रहित होते हुये भी समस्त रूपों से युक्त है। ब्रह्मपरम ज्योति है, वह प्रकाशकों का प्रकाशक है। सूर्य चन्द्र भी परम ज्योति से प्रकाशित है। आत्मवेत्ता ही उस परम ज्योति का साक्षात्कार करते हैं।

‘‘हिरण्यमये परे कोशे विरजं ब्रह्मनिष्फलम्।

तच्छुरत्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदोविदुः।।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं

नेमा विद्युतो भान्ति कुतो यमग्निः।

तमैव भान्तमनुभाति सर्वं

तस्य भाषा सर्वमिदं विभाति।।‘‘7

महाभारत के शान्ति पर्व में मोक्ष के अनेक स्तर मिलते हैं। महाभारत के शान्ति पर्व में मोक्ष का विवेचन प्राचीन उपनिषदों की पद्धति पर आधारित है। गीता में मोक्ष को सिद्धि, परमसिद्धि और संसिद्धि में जाना जाता है। शान्तिपर्व में गुणातीत अवस्था मोक्षावस्था का पर्याय है। जब जीव देह के कारण तीन गुणों में अतीत हो जाता है तब जन्म, मृत्यु और जरावस्था के दुःख से मुक्त होकर अमरत्व को प्राप्त होता है। गुणातीत अवस्था में प्रकाश, प्रवृत्ति और मोह के प्रवृत्त होने पर पुरुष न तो किसी से द्वेष करता है और इनके निवृत्त

होने पर किसी प्रकार की इच्छा भी नहीं करता है।

गुणातीत अवस्था अनन्य भक्ति से युक्त होने पर ही प्राप्त होती है और जीव मुक्त-पुरुष होकर ब्राह्मी स्थिति में रमण करता है।

ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त होकर ब्रह्म ज्ञानी संसार बन्धन में डालने वाले अज्ञान से जीव मुक्त हो जाता है और इसी स्थिति में ही स्वाभाविक रूप से रहता जीव जीवनमुक्तावस्था को छोड़कर विदेहमुक्ति को प्राप्त करता है। गीता में कहा है -

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्यार्थ मनोगतान्
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थित प्रज्ञस्तदोच्यते
विहाय कामान्यः सर्वान्युमांश्चरति निःस्पृहा।
एषा ब्राह्मीस्थितिः पार्थ नैनां प्राप्यविमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्त्रकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति

ब्रह्मवित् ब्राह्मी स्थिति में स्थित होकर संसार को जीतकर मन को साम्यावस्था में पहुंचाकर निर्दोष और सम ब्रह्म में स्थित हो जाता है। ब्राह्मी स्थिति में रहते हुए ब्रह्मवित् प्रिय और अप्रिय में समान स्थितप्रज्ञ और मोह रहित होता है। आत्मा में रमण करने वाला ब्रह्मवित् ब्रह्म से युक्त होकर परमानन्द को प्राप्त कर लेता है।

अव्यक्त, अविनाशी ब्रह्म को परमगति कहा गया है और पुनर्जन्म से रहित परमधाम का वर्णन गीता के अष्टम अध्याय के 21वें श्लोक में मिलता है -

‘‘अव्यक्तोक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निर्वतन्ते तद्धाम परमं मम्।।8

यहां पर परमधाम और परमपद पर्याय ही माने गये हैं। गीता के 18वें अध्याय में परमपद प्रवेश का वर्णन है। पुरुषोत्तम ब्रह्म के अनुग्रह से नित्य परमपद की प्राप्ति होती है। यथा -

‘‘भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वमः।
ततो मां तत्वतो ज्ञात्वा विशतेतदनन्तरम्।।
सर्व कर्माण्यपि सदा कुर्वाणों मद्व्याथयः।

मत्प्रसादाद्वाप्नोति शाश्वतं पदव्ययम्।।

ब्राह्मी स्थिति की उच्च भूमि में सविशेष ब्रह्म और निर्विशेष ब्रह्म दोनों से जीव युक्त रहता है। जीवन्मुक्तावस्था में परमपद का आनन्द पाता है और विदेह मुक्ति होने पर दोनों प्रकार से परमपद को प्राप्त करता है।

शान्ति पर्व के 199वें अध्याय में अविनाशी परमब्रह्म को परमधाम कहा गया है। कहा गया है -

‘‘तद्ब्रह्म परमं प्रोक्तं तद्धाम परमं स्मृतम्।

तद्गत्वा कालविषयादिमुक्ता मोक्षमाश्रिता।।9

शान्ति पर्व में बताया गया है कि निर्गुण ब्रह्म यद्यपि पदातीत है, तथापि उसे परमपद कहा जाता है। इसके मार्ग में देवता लोग भी मोहित हो जाते हैं। जैसे आकाश में पक्षी की, जल में जलचर प्राणियों की गति का ज्ञान नहीं होता है, उसी प्रकार से मुक्तात्या की ब्रह्म में गति का निर्देष नहीं किया जा सकता है।

‘‘सर्वभूतात्मभूतस्य सर्वभूतहितस्य च।

देवापि मार्गे मुह्यन्ति अपदस्य पदैषिणः।।

शकुनीनामिवाकाशे जलेवारिचरस्य वा

यथा गतिर्त दृश्यैत तथैव सुमहात्मनः।।10

मुक्तावस्था में जीव शोक आदि अनर्थों से मुक्त हो जाता है। ब्रह्म निर्दोष और सम होने के कारण मुक्त पुरुष शोक, मोह आदि दोषों से मुक्त होकर ब्रह्म में स्थित हो जाता है। गीता के पंचम अध्याय में वर्णन प्राप्त होता है -

‘‘इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।

निर्दोष हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः।।‘‘

गीता के पंचम अध्याय में कहा गया है कि मुक्तात्मा बाह्य विषयों के सुख में लिप्त न होकर आत्मा में आनन्द प्राप्त करता है और ब्रह्म से युक्त हुआ परमानन्द को प्राप्त कर लेता है।

बाह्ययेस्पशष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनियत्सुखम्

स ब्रह्म योगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते।।

परमज्ञान ब्रह्म ज्ञान ही है। इस ब्रह्म ज्ञान की अवस्था में ही पराभक्ति का विकास होता है। पराभक्ति और परानन्द को अविनाभावी बताया गया है। परम प्रेम पराभक्ति से ही आविर्भूत होता है। गीता के 18वें अध्याय में कहा गया है -

‘‘ब्रह्मभूता प्रसन्नतात्मा न शेचति न कांक्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्ति लभते पराम्‘‘।।

निष्कर्ष -

इस प्रकार से महाभारत के शान्ति पर्व में मोक्ष में परम ज्ञान, परम आनन्द, पराभक्ति, परम शान्ति आदि का वर्णन प्राप्त होता है जो उपनिषदों आदि के अनुकूल है। शान्ति पर्व में मोक्ष का निरूपण विस्तार से प्राप्त होता है, मुक्तावस्था का भी वर्णन प्राप्त होता है। पराभक्ति का वर्णन शान्ति पर्व में विशेष रूप से मिलता है। मोक्ष प्रतिपादन में गुण सिद्धान्त का प्रयोग प्राप्त होता है, परन्तु वह शैली के रूप में है। यह भी श्रेष्ठतम दार्शनिक योगदान है। पराभक्ति के प्रतिपादन में परवर्ती आचार्य महाभारत के शान्ति पर्व से अधिक प्रभावित प्रतीत होते हैं।

महाभारत के शान्तिपर्व में मोक्ष साधनों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। मोक्ष के साधनों में ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों का निरूपण प्राप्त होता है, तथापि भक्ति को प्रमुख रूप से महत्व दिया है। शान्तिपर्व में भगवत् साक्षात्कार ही मोक्ष का लक्षण है। कहीं-कहीं भगवान में लय अथवा ब्रह्म में लय को ही मोक्ष कहा गया है। शान्ति पर्व में कहीं-कहीं परमधाम का भी उल्लेख मिलता है, जिसमें जीव भगवान के साथ नाना प्रकार की लीलाओं का अनुभव करता है।

दार्शनिक दृष्टि से शान्ति पर्व का अत्यधिक महत्व है। महाभारत में गीता के अनन्तर शान्ति पर्व का सर्वाधिक महत्व है।

संदर्भ

1. ईशादिनो उपनिषद् ईशावस्योपनिषद्-7/पृ.सं. 30
2. ईशादिनौ उपनिषद्, केनोपनिषद्-4/9 पृ.सं. 6
3. ईशादिनौ उपनिषद् - कठोपनिषद्-1/2/10, पृ.सं. 92/93
4. ईशादिनौ उपनिषद्-तैत्तिरीयोपनिषद्, 2/1/47, पृ.सं. 305, 313
5. गीता प्रेस संस्करण, 7/26, पृ.सं. 799
6. कठोपनिषद् 2/1/2
7. मुण्डकोपनिषद् 2/2/9, 10
8. गीता, अष्टम अध्याय/21वां श्लोक
9. महाभारत-12/199/14
10. महाभारत 12/237/23-24